: सप्तम् अध्याय :

उपसंहार --निष्कर्षात्मक विवेचन :--- प्रयोजन एवं सिद्धि ।

" लक्ष्मीनारायण लालके अंधाकुआँ नाटकका लोकतात्त्विक अध्ययन "

प्रस्तुत शोध प्रबंधमें छह अध्याय हैं । विषय विवेचन और अध्ययन-क्रम निर्धारित करनेमें पूर्णत: वैज्ञानिक पद्धति अपनायी गई है ।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत यह सिद्ध किया है कि "लोकतत्त्व" याने लोककी अभिव्यक्ति है । अभिव्यक्तिके अनेक रूप लोकमें विद्यमान हैं । लोकतत्त्वोंका क्षेत्र विशाल है । इसमें लोकनाट्य, लोकनृत्य, लोकसंगीत, लोककला, लोकसाहित्य, लोकरूढि, लोकविश्वास, आदिका समावेश होता है । लेकिन अंधाकुआँ नाटकके अध्ययन करते वक्त निम्नलिखित लोकतत्त्व सम्मिलित किए हैं ---(१) लोकभाषा, मुहावरें, कहावतें, अश्लील तत्त्व = गालियाँ । (२) लोकविश्वास (लोकरूढि) । (३) लोकउपमान । (४) लोकगीत ।

इस तरह शोध प्रबंधकी व्याप्ति निश्चित की है । द्वितीय अध्यायमें अंधाकुआँकी कथावस्तु प्रस्तुत की है । अंधाकुआँकी कथावस्तु का बीज अत्यंत छोटा है । भगौती का अपनी पत्नी सुकापर संदेह और उसकी प्रतिक्रियामें नाटककी कथावस्तु पिरोयी गई है । कथावस्तु वैयक्तिक होते हुए भी "लोक" की पृष्ठभूमिपर स्थित इसके दो ही पात्र महत्वपूर्ण हैं और बाकी सब पात्र सहायक हैं । शीर्षक अत्यंत सार्थक है ।

तृतीय अध्यायमें लोकतत्त्वोंकी स्थितिके अंतर्गत लोकभाषा ले ली गई है । "लोकभाषाके अंतर्गत सार्थक, निरर्थक, एकही शब्द की द्विरुक्तिवाले तथा विरोधमूलक (द्वित्त्वमूलक) शब्दरूपोंके उदाहरण अंधाकुआँके आधारपर दिए गये हैं । साथही लोकमें "तत्सम" शब्दोंकी अपेक्षा "तद्भव" शब्दोंका प्रयोग करनेमें मुखसुख, प्रयत्न लाघव और कठिनतासे सरलताकी ओर जानेकी-- प्रवृत्ति लोकमें विद्यमान हैं । साथही वे हर वाक्यके साथ गालियोंका, अपशब्दोंका प्रयोग बेझिझक करते हैं । जिसका प्रतिबिंब अंधाकुआँ में मिलता है ।

चतुर्थ अध्याय में लोकतत्त्वके लोकरुढि शकुन अपशकुन, अंधविश्वास, मंत्र-तंत्र, जादू टोना, टोने-टोटके, भाग्य, प्रथा, रीति-रिवाज, आशिर्वाद, जैसे विविध रूपों का परिचय, अंधाकुआ के आधारपर कराया गया है। पंचम अध्याय में लोक-उपमानोंके संदर्भमें विवेचन किया गया है। लोक-उपमान तीन विभागोमें विभक्त किए गये हैं। (१) प्राकृतिक। (२) पशुपक्षी वर्ग। (३) मानव वर्ग तथा मानव जीवनसे संबंधित। अंधा कुआके आधारपर इन तीनोंके क्रमश: उदाहरण उद्धृत किए हैं।

षष्ठम् अध्यायमें लोकगीतोंका विवेचन किया है। इसमें प्रथम लोकगीत "कजली" है और व्दितीय "चक्की गीत" है। इनका अर्थ देकर अंधाकुआमें इन लोकगीतोंका प्रभाव चित्रित किया गया है और इस अंक के अंत में कजली और चक्कीगीत की तुलना स्वरुप, आकार, वर्ण्यविषय और प्रभावके आधारपर की है।

लोकतत्त्वोंमे अव्दितीय स्वाभाविकता, स्वच्छंदता तथा सरलता होती है। लोक स्वाभाविकताकी गोदमें पला हुआ जीव है। आडंबर तथा कृतिमतासे कोसों दूर यह "लोक" विभिन्न रुढियोंसे जकडा हुआ है। संक्षेपमें लोककी मानसिक संपन्नताके अंतर्गत जो भी वस्तु आ सकती है। वे सभी लोकतत्त्वोंके क्षेत्रकी चीजे है। इसतरह डा. लक्ष्मी नारायण लाल का अंधाकुआँ नाटक एक लोकतात्त्विक कृति है।

प्रस्तुत शोध प्रबंधकी देन :--- "अंधा कुआ" नाटकके आधारपर जैसे लोकतत्त्वोंका विचार किया है। साथ ही कथावस्तुके माध्यमसे लेखककी अवलोकन क्षमताका परिचय मिलता है। लोकजीवनकी झांकी, उनका स्वाभाविक रंग हमारे सामने पेश करनेमें लेखककी क्षमता, लोकतत्त्वोंपर उसका अधिकार दिखाई देता है। आपने यह अच्छी तरहसे पहचाना है कि जीवन की स्वाभाविकता--ही लोकमानसको जोडती है और आजकी एकात्मकताके संदर्भमें इसका बहुत महत्त्व और आवश्यकता है।

--: सहायक सामग्री-सूची :--

(अ) हिंदी पुस्तकें :--

(१) उपाध्याय कृष्णदेव; लोक साहित्यकी भूमिका,
तृ॰ सं॰(१९७७) साहित्य भवन (प्रा॰)लिमिटेड, इलाहाबाद ३।

(२) (डा॰) कांती विमलेश; भारतेंदु युगीन हिंदी काव्यमें लोकतत्त्व,
प्र॰ सं॰ (१९७४) ; ऋषभचरण जैन एवं संतति, --दिल्ली, ६।

(३) (डा) गौड रामशरण; लोकसंस्कृतिके प्रवर्तक --सूर,
(१९८२) विभूति प्रकाशन ।

(४) (डा) डोगरा उषा; हिंदीके आंचलिक उपन्यासोंका लोकतात्त्विक विमर्श, --प्र॰सं॰ (१९८४) अनुभव प्रकाशन, कानपूर ।

(५) (डा) परमार श्याम; भारतीय लोकसाहित्य; प्र॰सं॰(१९५४)
राजकमल पब्लिकेशान्स लि॰ बम्बई ।

(६) (डा) भ्रमर रविंद्र; हिंदी भक्तिसाहित्में लोकतत्त्व,--
प्र॰सं॰ (१९६५) दिल्ली ।

(७) (डा) मिश्र सरजू प्रसाद; नाटककार लक्ष्मी नारायणलाल,---
प्र॰सं॰(१९८०) पंचशील प्रकाशन, जयपूर ।

(८) राय नरनारायण; नाटककार लक्ष्मीनारायणलालकी नाट्य साधना; प्र॰सं॰(१९७८) सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली।

(९) (डा) लाल लक्ष्मीनारायण; अंधा कुआं, --- प्र॰सं॰ (१९५५)
भारती भंडार, प्रयाग ।

(१०) (डा) ~~कहावते~~ --वर्मा सिद्धेशावर राजस्थानी कहावते;

(१५) (डा) सक्सेना कृष्णमोहन; भारतेंदु युगीन नाटयसाहित्यमें लोकतत्त्व; प्र० सं० (१९७७) --अभिनव भारती, इलाहाबाद।

(१२) (डा) सत्येंद्र --मध्ययुगीन हिंदी साहित्यका लोकतात्त्विक अध्ययन;-- प्र०सं० (१९६०) विनोद पुस्तक मंदिर, आग्रा।

(१३) (डा) सहल कन्हैयालाल; राजस्थानी कहावते;--प्र०सं०(१९७८) भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली।

(१४) सिंह शंभु;--- रांगेय राघव और आंचलिक --उपन्यास;-- प्र०सं० (१९७९) सुशिल प्रकाशन अजमेरा।

(ब) कोश :---

(१) (डा) वर्मा धीरेंद्र; हिंदी साहित्य कोश, प्रथम खंड -- सं० २०१५ वि० --वाराणसी।

(२) ~~(डा)~~ वर्मा रामचंद्र :-- अच्छी हिंदी।

(3) वर्मा रामचंद्र:- प्रामाणिक हिंदी कोश।

(क) पत्र- पत्रिकाएं :--

(१) जनपद-वर्ष १ अंक १; (डा) व्दिवेदी हजारी प्रसाद, हिंदी जनपदीय परिषाद का त्रैमासिक मुखपत्र, काशी।

(२) प्रेमघन सर्वस्व, --व्दितीय भाग।

(३) लोक रागिणी।

(३) अंग्रेजी :--

(1) Gond. J; --Remarks on the similies in Sanskrit-Literature, (1949).

(2) Paradkar-M.D.--Similies in Manusmrti, (1960).

(3) Trench-R.C. --- Lessions in Proverbs.

(4) Encyclopaedia of Britanica-Vol.1. (1956).
Ed. Walter Yost--(London).

(5) Encyclopaedia of Religion ----~~&-EdXJamesXHastings~~--Ethics-Vol.10. (1961).
-- Ed.James Hastings.

. . . .
. . . .